हज़रते मख़्दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी की एक नायाब तस्नीफ़
अ़रबी मतन और आसान हिन्दी के साथ

शर्ह
सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार

मुसन्निफ़

कुत़्बे कोकन इमामे रब्बानी ह़ज़रत رحمۃ اللہ علیہ
मख़्दूम फ़क़ीह अ़ली बिन अह़मद महाइमी शाफ़ेई
(हिजरी 776 से 835)

तर्जमा व तहक़ीक़

मुफ़्ती फ़ारूक़ ख़ान महाइमी मिस्बाही

नाशिर
मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर, मीनारा मस्जिद, मुंबई

हुज़ूर शैख़ुल हिन्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बारहा फ़रमाया करते थे

"मीनारा मस्जिद औलिया अल्लाह की राजधानी है !"

मीनारा मस्जिद का एक ह़सीन मन्ज़र

मस्जिदे मीनारा का मन्ज़र है कुछ ऐसा ह़सीं
मुम्बई में कोई मस्जिद इस की हम रुतबा नहीं
शाह अ़ब्दुल्लाह और ह़ज़रत मुज़फ़्फ़र के तुफ़ैल
बन गई है येह सरापा गुलशने ख़ुल्दे बरीं
आलो अस्ह़ाबे नबी के इश्क़ का मरकज़ है येह
औलिया अल्लाह की है राजधानी ये ज़मीं

(अज़ : ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद बिलाल अशरफ़ी)

सिराजे मीनारा मस्जिद

हज़रत मौलवी सय्यिद अ़ब्दुल्लाह शाह رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ

हज़रत सय्यिद मुज़फ़्फ़र हुसैन शाह رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ

पंजतने पाक

अशरए मुबश्शरा

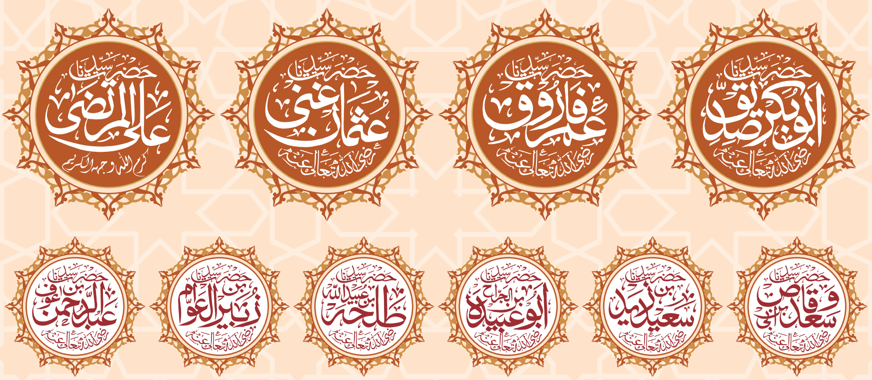

आइम्मए अहले बैत

حضرت
امام علی
کرم اللہ وجہہ الکریم

حضرت
امام حسن
رضی اللہ تعالیٰ عنہ

حضرت
امام حسین
رضی اللہ تعالیٰ عنہ

حضرت
امام زین العابدین
رضی اللہ تعالیٰ عنہ

حضرت
امام محمد باقر
رضی اللہ تعالیٰ عنہ

حضرت
امام جعفر صادق
رضی اللہ تعالیٰ عنہ

حضرت
امام موسیٰ کاظم
رضی اللہ تعالیٰ عنہ

حضرت
امام علی رضا
رضی اللہ تعالیٰ عنہ

حضرت
امام محمد تقی
رضی اللہ تعالیٰ عنہ

حضرت
امام علی نقی
رضی اللہ تعالیٰ عنہ

حضرت
امام حسن عسکری
رضی اللہ تعالیٰ عنہ

حضرت
امام محمد مہدی
رضی اللہ تعالیٰ عنہ

आइम्मए अरबआ

الامام الاعظم
ابو حنیفہ النعمان
رضی اللہ عنہ

امام دار الهجرة
مالک بن انس
رضی اللہ عنہ

الامام المجدد
محمد بن ادریس الشافعی
رضی اللہ عنہ

الامام المبجل
احمد بن حنبل
رضی اللہ عنہ

ह़ज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी की एक नायाब तस्नीफ़
अ़रबी मतन और आसान हिन्दी तर्जमे के साथ

शर्हु सय्यिदिल इस्तिग़फ़ार

- : मुसन्निफ़ :-

क़ुत़बे कोकन इमामे रब्बानी ह़ज़रते
मख़दूम फ़क़ीह अ़ली बिन अह़मद महाइमी शाफ़ेई رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ
(हिजरी 776 से 835)

- : तर्जमा व तह़क़ीक़ :-

मुफ़्ती फ़ारूक़ ख़ान महाइमी मिस्बाह़ी

- : नाशिर :-

मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर, मीनारा मस्जिद, मुंबई - 400003

© जुम्ला हुक़ूक़ बहक़्क़े नाशिर महफ़ूज़ हैं

सिलसिला ए इशाअ़त नंबर 4

नाम किताब : शर्ह सय्यिदिल इस्तिग़फ़ार

मुसन्निफ़ : क़ुत़बे कोकन ह़ज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

तर्जमा-तहक़ीक़ : मुफ़्ती फ़ारूक़ ख़ान महाइमी मिस्बाह़ी, मुंबई

maulaaliresearchcentre13@gmail.com

हिन्दी लिपिक : फ़ारूक़ शाह अ़त्तारी अशरफ़ी, बरोडा (9327776311)

इशाअ़ते अव्वल : 1446 हिजरी / 2025 ईसवी

नाशिर : मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर, मीनारा मस्जिद, मुंबई -3

सफ़ह़ात : 57

हदिया : दुआ़ ए ख़ैर

मिलने के पते

- मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर, मीनारा मस्जिद, मुंबई-3 — 7021960871
- ख़ानक़ाहे अशरफ़िया, बुर्ज क़ादिरी, मुंबई-8 — 9167334438
- मौलाना मज़हर हुसैन अ़लीमी, मुंबई — 7021333375
- मुतर्जिमे किताब फ़ारूक़ ख़ान महाइमी मिस्बाह़ी — 7860311024

उर्दू से हिन्दी लिपियांतर चार्ट

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ھ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
? = ؟	ी = یُ	ू = وُ	आ = آ	य = ی

-: नाशिर :-

मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर, मीनारा मस्जिद, मुंबई - 400003

E-mail : maulaali.researchcentre@gmail.com

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

अर्ज़े नाशिर: 5

तक़रीज़े जलील: 7

मुक़द्दमा: 10

मशमूलात	सफ़्हा	मशमूलात	सफ़्हा
किताब कैसे हाथ लगी ?	11	"शर्हु सय्यिदिल इस्तिग़फ़ार" किस की तस्नीफ़ है ?	13
पहला मख़्तूता	11	हम ने जो काम किया	13
दूसरा मख़्तूता	12	इज़हारे तशक्कुर	14

मुख़्तसर सवानेहे हज़रते मख़दूम फ़क़ीह अली महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه : 16

विलादत	16	सूफ़ियाना मसलक	26
नाम व नसब	17	शैख़ मुहयुद्दीन इब्ने अ़रबी की पैरवी	26
तालीमो तर्बियत	18	वफ़ात	28
मसनदे तदरीस	23	क़लमी यादगारें	28
तलामिज़ा	23	जिन किताबों पर काम हो चुका है	29
बहैसिय्यते क़ाज़ी	24	जिन किताबों पर काम करना बाक़ी है	29
फ़िक़ही मसलक	25	जिन किताबों के सिर्फ़ नाम मिलते हैं	32

अर्ज़े नाशिर

हमारे अस्लाफ़ की ऐसी हज़ारों किताबें हैं, जिन के मख़्तूते आज भी दुनिया भर की मुख़्तलिफ़ लाइब्रेरियों में मौजूद हैं, जिन पर नए सिरे से काम करने की ज़रूरत है, मगर आज तक उन पर सह़ीह़ मानों में काम ना हो सका। एक मुफ़क्किर जब क़ौम की येह बे तवज्जोही देखता है, तो उस का दिल ख़ून के आंसू रोता है और उस की ज़बान से बे साख़्ता निकलता है :

मगर वोह इ़ल्म के मोती, किताबें अपने आबा की
जो देखीं उन को यूरोप में, तो दिल होता है सी पारा (1)

MAULA ALI RESEARCH CENTRE

क़ौमे मुस्लिम की इसी बे ह़िसी को दूर करने के लिए, **मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर** (ज़ेरे इंतिज़ाम मीनारा मस्जिद ट्रस्ट, मुंबई) का क़ियाम अ़मल में आया है। हमारा, अव्वलीन मक़सद यही है कि अस्लाफ़ की जिन किताबों पर अब तक काम नहीं हो सका, या जो किताबें अब नायाब हो चुकी हैं, उन पर नए सिरे से काम कर के, उन्हें क़ौमे मुस्लिम के ह़वाले कर दिया जाए।

हम ने अपने इस मिशन का आग़ाज़, क़ुत़बे कोकन ह़ज़रते **मख़्दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी** رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ की एक नायाब किताब **“ग़ायतुल वुजुद बि मारिफ़ति वह़दतिल वुजूद”** शाएअ़ कर के कर दिया है।

(1) यानीः टुकड़े टुकड़े

आप के हाथों में मौजूद किताब "शर्हु सय्यिदिल इस्तिग़फ़ार" इसी मुबारक सिलसिले की दूसरी कड़ी है । येह किताब भी ह़ज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की है, जो अ़वाम व ख़वास दोनों के लिए यकसां मुफ़ीद है।

इस किताब के मख़तूते कैसे ह़ासिल हुवे और इस पर किस त़रह़ काम हुवा है, इस का अंदाज़ा आप मुतर्जिम साह़िब के मुक़द्दमे और किताब के मुताले से बाआसानी लगा सकेंगे।

किताब के मुतर्जिम ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ महाइमी मिस्बाह़ी एक जवां साल आ़लिमे दीन और मुसन्निफ़ व क़लमकार हैं, इन्हें क़ुत़्बे कोकन ह़ज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से इ़श्क़ की ह़द तक लगाव है और मौलाना मौसूफ़ का मस्कन भी माहिम (Mahim) ही है, इस लिए इन दो निस्बतों की वज्ह से अपने नाम के साथ महाइमी लिखते हैं, मौलाना मौसूफ़ ने इस किताब के तर्जमे, तस्ह़ीह़ व तस्हील में बड़ी अ़र्क़ रेज़ी की है।

अल्लाह पाक इन की तमाम ख़िदमाते दीनिया को क़बूल फ़रमाए और इस किताब को शरफ़े क़बूलिय्यत अ़ता फ़रमाए । क़ारिईन दुआ़ फ़रमाएं कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर (ज़ेरे इंतिज़ाम मीनारा मस्जिद ट्रस्ट, मुंबई) को अपने इस अ़ज़ीम मक़सद में कामयाब फ़रमाए।

इदारा

मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर मुंबई

ज़ेरे इंतिज़ाम मीनारा मस्जिद ट्रस्ट, मुंबई

तक़रीज़े जलील

हज़रते अ़ल्लामा व मौलाना
अ़ब्दुर्रशीद रह़मानी बरकाती अशरफ़ी मिस्बाही
ख़लीफ़ए हुज़ूर सय्यिद आले रसूल ह़सनैन मियां
बरकाती नज़मी मारेहरवी
(ख़तीबो इमाम मीनारा मस्जिद, मुहम्मद अ़ली रोड, मुंबई)

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ وَنُسَلِّمُ عَلٰی حَبِیۡبِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی آلِہٖ وَاَصۡحَابِہٖ اَجۡمَعِیۡنَ

अम्मा बाद ! तस्नीफ़ व तालीफ़ नीज़ तर्जमा येह सब बड़े दिक़्क़त त़लब और मशक़्क़त के काम हैं, अल्लाह तआ़ला जिस से चाहे ले ले। ह़ज़रत मौलानल मुकर्रम मुफ़्ती फ़ारूक़ ख़ान महाइमी मिस्बाही زِیۡدَ مَجۡدُہٗ وَعِلۡمُہٗ وَکَرَمُہٗ एक जवां साल, जवां मर्द, जवां हिम्मत मर्दे मैदान हैं, सीरतन बड़े मुतवाज़ेअ, सूरतन बड़े बावक़ार, सितारए बुलंदी उन की ताबनाक पेशानी से चमकता दमकता नज़र आता है, गुफ़्तगू और लहजे से बड़े मतीन और संजीदा मोहिनी सूरत वाले आ़लिमे रब्बानी दिखते हैं।

مَنْ خَدَمَ خُدِمَ(1) और "हर कि ख़िदमत कर्द, ओ मख़्दूम शुद" के मुताबिक़ मख़्दूमे पाक رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दीन की ख़िदमत कर के, वालिदा ए मोह्तरमा رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत की सआदत ह़ासिल कर के, मख़्दूमिय्यत का मुक़ाम पा लिया, अब जिसे मख़्दूम बनना है, हुज़ूर मख़्दूमे महाइमी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तसानीफ़ की ख़िदमत कर के मख़्दूमों की सफ़ों में मुक़ाम ह़ासिल कर ले।

ईं सआदत बज़ोरे बाज़ू नीस्त

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़दीस की तशरीह़, मख़्दूमे पाक رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ह़वाले से, वोह भी इतनी पुरकशिश तह़रीर, तर्जुमानी और तह़क़ीक़ के साथ कि दिल में तह़रीर की शगुफ़्तगी और रवानी उतर जाए, येह बुज़ुर्गों की इ़नायत और उन की मह़ब्बत का समरा है।

किताब "शर्हु सय्यिदिल इस्तिग़फ़ार" अपनी फ़साहत और उ़म्दा तर्जुमानी के एतिबार से तर्जमे के बजाए अस्ल किताब लगती है, अ़रबी मतन की लज़्ज़त तर्जमे में भरपूर मह़सूस होती है, फ़सीह़ अ़रबी और सलीस उर्दू दोनों में मौलाना की महारत और क़ादिरुल कलामी यकसां नज़र आती है।

दुआ़ करना मह़बूब अ़मल है और दुआ़एं मोअस्सिर भी होती हैं। लेकिन वोह दुआ़ जो कुन की कुंजी की ज़बान से निकली हो, उस की अहमिय्यत, मक़्बूलिय्यत और तासीर पर क्या कलाम हो सकता है।

(1) यानी: जो ख़िदमत करता है, उस की ख़िदमत की जाती है।

अदइया[1] व अज़कार की अ़मली ज़िंदगी में अहमिय्यत से इन्कार मुमकिन नहीं, हमें अल्लाह पाक तौफ़ीक़ बख़्शे कि उस के मह़बूबों की ज़बान से निकले हुवे कलिमात से दुआ़ करें।

रब तआ़ला मौलाना फ़ारूक़ महाइमी, उन के मुआविनीन, ख़ास कर मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर (ज़ेरे इंतिज़ाम मीनारा मस्जिद ट्रस्ट, मुंबई) के बानियान और मुहि़ब्बान को मज़ीद ख़िदमत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और इसे जारी व सारी रख कर इस की ख़िदमात को सबातो दवाम नसीब फ़रमाए। آمِیْن بِجَاہِ سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

अ़ब्दुर्रशीद रह़मानी बरकाती अशरफ़ी

(मीनारा मस्जिद)

14 ज़ी क़ादह 1445 हिजरी / 23 मई 2024 ईसवी

(1) यानी: दुआ़एं

मुक़द्दमा

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ　　حَامِدًا وَّ مُصَلِّیًا وَّ مُسَلِّمًا

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

बुख़ारी शरीफ़ में एक दुआ है, जिसे "सय्यिदिल इस्तिग़फ़ार" कहते हैं। इस दुआ के मुतअल्लिक़ हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है:

"जो इस दुआ पर यक़ीन रखते हुवे दिन में इसे पढ़ेगा और रात आने से पहले इन्तिक़ाल कर जाएगा, तो वोह जन्नती होगा और जो कोई इस दुआ पर यक़ीन रखते हुवे रात में इसे पढ़ेगा और दिन निकलने से पहले इन्तिक़ाल कर जाएगा वोह भी जन्नती होगा।"(1)

आप के हाथों में जो किताब है, येह इसी दुआ की मुख़्तसर शर्ह है और शारेह, क़ुतबे कोकन हज़रते मख़दूम फ़क़ीह अली महाइमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ हैं, जिस से किताब की अहमिय्यत का अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

इस दुआ में एक कलिमा है : "مَا اسْتَطَعْتُ" हज़रते मख़दूम फ़क़ीह अली महाइमी ने इस की बड़ी अनोखी शर्ह फ़रमाई है, और लोगों ने तो "مَا اسْتَطَعْتُ" के "مَا" को "माए मौसूला" माना है, जब कि हज़रते मख़दूमे

(1) बुख़ारी शरीफ़, हदीस नंबर: 6323

महाइमी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस ''ما'' को "माए नाफ़ियह" मान कर बड़ी दिल नशीं तशरीह़ फ़रमाई है।

इस दुआ का नाम "सय्यिदिल इस्तिग़फ़ार" क्यूं पड़ा ? इस के मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रते मख़्दूमे महाइमी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं:

"لِاَنَّہٗ تَوْبَۃٌ وَاِسْتِغْفَارٌ تَامٌّ، جَمِیْعُ الْاِسْتِغْفَارَاتِ رَاجِعَۃٌ اِلَیْہِ، اِذْ مَا مِنْ اِسْتِغْفَارٍ اِلَّا وَفِیْہِ شَیْءٌ مِنْہُ؛ وَلِھٰذَا سُمِّیَ "سَیِّدُ الْاِسْتِغْفَارِ."

यानी: "इस लिए कि येह दुआ एक जामेअ़ तौबा है और इस्तिग़फ़ार भी, तमाम क़िस्म के इस्तिग़फ़ार इस इस्तिग़फ़ार की तरफ़ राजेअ़ हैं। क्यूंकि कोई भी इस्तिग़फ़ार ऐसा नहीं है जिस में इस इस्तिग़फ़ार का कुछ ह़िस्सा ना हो, इसी वज्ह से इस का नाम "सय्यिदिल इस्तिग़फ़ार" रखा गया है।"

हमें ख़ुशी है कि हम, ह़ज़रते मख़्दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की एक और क़ीमती तस्नीफ़ आप तक पहुंचाने में कामयाब हो गए हैं।

किताब कैसे हाथ लगी ?

सब से पहले हम ने किताब के दो मख़्तूते ह़ासिल किए, जिस की तफ़सील कुछ इस त़रह़ है:

पहला मख़्तूता

हम ने एक मख़्तूता बज़रीए इंटरनैट (Internet) हार्वर्ड यूनीवर्सिटी, अमरीका (Harvard University America) से ह़ासिल किया, येह कुल 16 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल है, हर सफ़्ह़ा 9 सत़र और औसतन 8 कलिमात पर मुश्तमिल है।

पहले सफ़्हे पर किताब और मुसन्निफ़ का नाम है और आख़िरी सफ़्हे पर सिने किताबत 1265 हिजरी तह्रीर है। येह मख़्तूता 180 साल क़दीम है।

दूसरा मख़्तूता

दूसरा मख़्तूता हम ने "कुतुबख़ाना मद्रसए मुहम्मदिया, जामेअ़ मस्जिद मुंबई" से हासिल किया जिस का इंदिराज नंबर 308 AM है। AM से मुराद "अ़रबी मख़्तूता" है। येह मख़्तूता कुल 6 सफ़्हात पर मुश्तमिल है, हर सफ़्हा 19 सतर और औसतन 10 कलिमात पर मुश्तमिल है।

मख़्तूते की दफ़्ती पर एक स्टीकर (Sticker) लगा हुवा है, जिस पर कातिब का नाम "अ़ब्दुर्रहमान बिन ईसा" और सिने किताबत 1120 हिजरी लिखा है, यानी 1445 हिजरी 2024 ईसवी में इस मख़्तूते की उ़म्र 325 साल हो गई है।

इसी स्टीकर (Sticker) से येह भी पता चलता है कि येह मख़्तूता पहले "मर्कज़ु जुमुअ़तिल माजिदि लिस्सक़ाफ़ति वत्तुरासि, दुबई" में था, बाद में "कुतुबख़ान ए मद्रसए मुहम्मदिया, जामेअ़ मस्जिद मुंबई" लाया गया है।

इस मख़्तूते की किताबत कुछ बारीक और गुंजलक ज़रूर है। मगर सिह्ते किताबत के एतिबार से येह पहले वाले मख़्तूते से ज़ियादा बेहतर है, इख़्तिलाफ़ी सूरत में हम ने इसी मख़्तूते को तरजीह दी है, क्यूंकि ज़ियादा सहीह और क़दीम मख़्तूता यही है।

"शर्हु सय्यिदिल इस्तिग़फ़ार" किस की तस्नीफ़ है ?

ह़ज़रते मख़्दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के तक़रीबन सभी तज़किरा निगार ने शर्हु सय्यिदिल इस्तिग़फ़ार का शुमार आप की तसनीफ़ात की फ़ेहरिस्त में किया है। ताहम दोनों मख़्तूतों से भी इस का सुबूत मिलता है कि येह किताब ह़ज़रते मख़्दूमे महाइमी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ही है।

पहले मख़्तूते के फ़र्स्ट पेज (First page) पर किताब और मुसन्निफ़ का नाम इस त़रह लिखा हुवा है:

"شَرحُ سَیِّدِ الْاِسْتِغْفَارِ لِلشَّیْخِ الْاِسْلَامِ
فَقِیْہ عَلِی مَھَائِمِی رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ"

जब कि दूसरे मख़्तूते की इख़्तितामी इ़बारत इस त़रह है:

"تَمَّتْ شَرْحُ سَیِّدِ الْاِسْتِغْفَارِ مِنْ تَصْنِیْفِ عَلَّامَۃِ الدَّھْرِ الْوَاصِلِ بِاللّٰہِ مَخْدُوْمِنَا وَسَیِّدِنَا الْفَقِیْہ عَلِیّ الْمَھَائِمِیّ غَفَرَ اللّٰہُ لَہٗ وَلِمَنْ تَبِعَہٗ."

यानी:

शर्हु सय्यिदिल इस्तिग़फ़ार मुकम्मल हुई। येह किताब, अ़ल्लामा ए दहर, वासिल बिल्लाह, ह़ज़रते मख़्दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तसानीफ़ में से एक तस्नीफ़ है।

हम ने किताब में दोनों इ़बारत की अ़कसी तस्वीर लगा दी है।

हम ने जो काम किया

- क़ुरआनी आयात व अह़ादीस की तख़रीज की गई है।
- क़ुरआनी आयात का फ़ोन्ट 1 MUHAMMADI QURANIC रखा गया है, जब कि दीगर अ़रबी इ़बारात का फ़ोन्ट ASAD रखा गया है, ताकि इम्तियाज़ बर क़रार रहे।
- क़ुरआनी आयात को इस त़रह़ ﴿ ﴾ के मुनक़्क़श ब्रैकेट (Bracket) में घेरा गया है।
- उर्दू तर्जमा मफ़हूमी किया गया है। ताकि तर्जमे का हुस्न बर क़रार रहे और क़ारी के लिए किसी दिक़्क़त का बाइ़स ना बने।
- रब्त़ बयान करने के लिए, लिखे गए इज़ाफ़ी जुमले, क़ौसैन () में कर दिए गए हैं।
- तर्जमे में जहां जहां अ़रबी इ़बारत आई है, उस पर एराब लगाया गया है, ताकि क़ारी किसी भी क़िस्म की उलझन का शिकार ना हो और अ़रबी ज़बान में भी दुआ़ पढ़ सके।
- ह़ज़रते मख़दूम फ़क़ीह महाइमी رَحۡمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيۡه का मुख़्तसर तज़किरा किया गया है।

इज़्हारे तशक्कुर

- मैं अपने वालदैने करीमैन, जुम्ला असातिज़ा ए किराम ख़ुसूसन ह़ज़रत मौलाना नूरुल क़मर (इब्ने रक़म) मिस्बाह़ी اَدَامَ اللهُ تَعَالٰى ظِلَّهُمْ का तहे दिल से शुक्र गुज़ार हूं, जिन की दुआ़एं और रहनुमाइयां, क़दम क़दम पर मेरे शामिले ह़ाल रहीं।

➤ हज़रत अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रशीद रहमानी मिस्बाही دَامَ ظِلُّهٗ ख़तीबो इमाम मीनारा मस्जिद, मुंबई का बेहद ममनून हूं कि आप ने अपनी गराँमाया तक़रीज़ के ज़रीए असाग़िर नवाज़ी का सुबूत देते हुवे, हमारी हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाई।

➤ हज़रत मौलाना मुहम्मद मज़हर हुसैन अ़लीमी, हाफ़िज़ मुहम्मद बिलाल अशरफ़ी, मुफ़्ती शमशीर अ़ली सिद्दीक़ी मिस्बाही और मौलाना ताहिर रज़ा मिस्बाही का भी शुक्रगुज़ार हूं कि आप हज़रात ने किताब का बिल इसतीआब मुतालआ़ फ़रमा कर अपने मुफ़ीद मशवरों और इस्लाहात से नवाज़ा।

➤ राक़िम, मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर (ज़ेरे इंतिज़ाम मीनारा मस्जिद, मुंबई) के सभी ट्रस्टियान का, ख़ास तौर पर अल्हाज अ़ब्दुल वह्हाब लतीफ़ अशरफ़ी साहिब का भी तहे दिल से शुक्रगुज़ार है कि जिन्हों ने मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर क़ाइम कर के अहम दीनी व मज़हबी किताबों की इशाअ़त का बीड़ा उठाया है, अल्लाह तआ़ला उन के हौसलों को सलामत रखे।

दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला मेरे वालिदैने करीमैन, मेरे जुम्ला असातिज़ा ए किराम, मेरे अहलो अ़याल, भाई बहन, दोस्त व अहबाब और जुम्ला क़ारिईन का ख़ातिमा ईमान पर फ़रमाए और दुआ़ ए सय्यिदिल इस्तिग़फ़ार की बरकत से सब की बे हिसाब मग़फ़िरत फ़रमाए।

آمِيْن بِجَاهِ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

फ़ारूक़ ख़ान महाइमी मिस्बाही
उस्ताद : मर्कज़ी जामिअतुल मदीना, मुंबई
साकिन : माहिम ईस्ट

बरोज़ मंगल
15 रजब 1445 हिजरी
1 फ़रवरी 2024 ईसवी

मुख़्तसर सवानेह़

ह़ज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी

رَحۡمَۃُ اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہ

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

विलादत

आप की विलादत महाराष्ट्र (Maharashtra) के मशहूर शहर कल्याण (Kalyan) में 10 मुह़र्रमुल ह़राम 776 हिजरी / 1372 ई़सवी को ख़ानदाने नवाइत के एक मुअ़ज़्ज़ज़ घराने में हुई।[1]

अक्सर तज़किरा निगारों ने आप की जाए विलादत "महाइम" लिखी है। लेकिन तह़क़ीक़ येह है कि महाइम आप का ननिह़ाल था, आप की विलादत कल्याण में हुई थी और कल्याण ही आप का आबाई वत़न

(1) तारीख़े कोकन सफ़ह़ाः 312, अज़: डाक्टर मोमिन मुहयुद्दीन (एम ए, पी ऐच डी) मत़बूआ नक़्शे कोकन पब्लीकेशन ट्रस्ट, मुंबई 9/ सुब्ह़तुल मरजान फ़ी आसारि हिन्दूस्तान, सफ़ह़ाः 90, अज़: ग़ुलाम आज़ाद बिलगिरामी, मत़बूआ : माहदुद्दिरासातिल इस्लामिया, जामिआ अ़लीगढ़

था, वालिदे मोह़तरम की वफ़ात के बाद वालिदा ए माजिदा आप को ले कर अपने मैके "महाइम" में मुक़ीम हो गईं थीं।[1]

आज जहां माहिम पुलिस स्टेशन (Mahim Police Station) है, वहीं आप की रिहाइश गाह थी और जहां आप का मज़ार है, वोह जगह आप के रिश्तेदारों का क़ब्रिस्तान था।[2]

नाम व नसब

आप का नाम अ़ली है, कुनियत अबुल ह़सन और लक़ब ज़ैनुद्दीन और अ़लाउद्दीन है। इ़ल्मे फ़िक़्ह में महारत रखने की वज्ह से "फ़क़ीह" और वालिदा ए माजिदा की ख़िदमतों के सिले में "मख़्दूम" का ख़िताब मिला, शहरे महाइम में सुकूनत और मदफ़ून होने की वज्ह से "महाइमी" आप के नाम का जुज़ हुवा, इस त़रह़ आप "मख़्दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी" के नाम से अ़रबो अ़जम में मशहूर हुवे।

आप के वालिद मौलाना शाह अह़मद कल्याणी बड़े मुतबह़्ह़िर आ़लिम और वली ए कामिल थे, वालिदा ए माजिदा फ़ाति़मा बिन्ते नाख़ुदा हुसैन निकोलिया भी वलिया ए कामिला और मुस्तजाबुद्दावात[3] थीं और नाना, नाख़ुदा हुसैन एक बड़े ताजिर थे।[4]

नसब नामा कुछ इस त़रह़ है:

अ़ली बिन अह़मद बिन ह़सन बिन इब्राहीम बिन इस्माई़ल बिन

(1) तारीख़े कोकन, सफ़ह़ाः 312-313, अज़: डाक्टर मोमिन मुह़युद्दीन, मत़बूआ़ नक़्शे कोकन पब्लीकेशन ट्रस्ट, मुंबई 9

(2) क़ुत़बे कोकन ह़ज़रते शैख़ मख़्दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी, सफ़ह़ाः 28, अज़: मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह परो मख़्दूमी क़ैसरी, मत़बूआ़ भुवनेश आर्ट मलाड, मुंबई

(3) **यानी:** वोह ज़ात जिस की दुआ़ कभी रद्द नहीं होती।

(4) मजल्लतुल बासिल इस्लामी, रबीउस्सानी: 1418 हिजरी / अगस्त व सितंबर 1997 ई़सवी, लखनऊ

मुहम्मद बिन अह़मद।[(1)]

आप अ़रबियुन्नस्ल थे, आप का तअ़ल्लुक़ ख़ानदाने नवाइत के क़बीले परो के मुअ़ज़्ज़ज़ घराने से था।[(2)] 252 हिजरी / 860 ईसवी के आस पास आप के आबा ओ अजदाद महाइम आए थे और इस के तक़रीबन पांच सौ (500) साल बाद ह़ज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पैदा हुवे।[(3)]

तालीमो तर्बिय्यत

इबतिदाई तालीम वालिदे माजिद ह़ज़रत मौलाना शाह अह़मद कल्याणी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से ह़ासिल की, चूं कि आप फ़ित़री त़ौर पर ज़हीन थे, इस लिए छोटी सी उ़म्र ही में वालिदे माजिद ने आला तालीम का दर्स देना भी शुरूअ़ कर दिया था, आप जब नव (9) साल के थे तब आप के वालिदे माजिद का इन्तिक़ाल हुवा था।[(4)] मगर उस वक़्त तक आप मुरव्वजा उ़लूम से आरास्ता हो चुके थे।[(5)]

(1) आप के नसब के मुतअ़ल्लिक़ मुतअ़द्दद अक़्वाल मिलते हैं, हम ने निहायत तह़क़ीक़ के बाद मज़कूरा क़ौल का इन्तिख़ाब किया है। "ज़मीरुल इन्सान लि इज़दियादि इश्तियाक़िल मुह़िब्बीन इला ज़िक्रिर्रह़मान", मत़बूआ: मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर, मीनारा मस्जिद और "ज़ीनतुल मजालिस" मत़बूआ: बइशतिराक "अशरफ़िया इस्लामिक फ़ाउन्डेशन, ह़ैदराबाद" - "अस्लाफ़ पब्लीशर्ज़, कल्याण" में आप हमारी तह़क़ीक़ मुलाह़ज़ा फ़रमा सकते हैं।

(2) सुब्ह़तुल मरजान फ़ी आसारि हिन्दूस्तान, सफ़ह़ा: 97, अज़: ग़ुलाम आज़ाद बिलगिरामी, मत़बूआ : माहदुद्दिरासातिलइस्लामियाजामिआ़अलीगढ़ / आईनाएअकबरी, जिल्द: 3, सफ़ह़ा: 174, मत़बूआ़नवलकिशोर

(3) The Gazetteer of Bombay City and Island, Vol: 3, page 301, Printed at the Times Press, 1910

(4) मौलाना शाह अह़मद कल्याणी का इंतिक़ाल 25 जुमादल आख़िरह 785 हिजरी / 1383 ईसवी में हुवा, कल्याण रेलवे स्टेशन से देढ़ किलो मीटर दूरी पर ग़फ़ूरडान चौक के पास ह़ज़रते शैख़ निज़ामुद्दीन ख़ामोश رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मज़ार के दाहिनी जानिब मदफ़ून हुवे। 1313 हिजरी / 1896 ईसवी में मक़बरे की तामीर अ़मल में आई।

(5) तारीख़ुन्नवाइत, सफ़ह़ा: 354, अज़: नवाब अज़ीज़ यार जंग बहादुर, मत़बूआ़: ह़ैदराबाद 1322 हिजरी / 1905 ईसवी

वालिद के इन्तिक़ाल के बाद आप की परवरिश की सारी ज़िम्मेदारी वालिदा ए माजिदा के सर आ गई, जो आप ने बहुस्नो ख़ूबी निभाई। लेकिन तालीमी सिलसिला मुनक़तअ़ हो जाने की वज्ह से आप बेक़रार रहने लगे और आला तालीम हासिल करने का जज़्बा बढ़ता ही गया। एक रोज़ आप ने अपनी वालिदा से तहसीले इ़ल्म की ख़ातिर बैरूने हिन्द सफ़र करने की इजाज़त मांगी। चूं कि वालिदा ए मोहतरमा के लिए आप की जुदाई ना क़ाबिले बर्दाश्त थी, इस लिए कुछ देर तअम्मुल करने के बाद फ़रमाया:

"अल्लाह तआ़ला मुसब्बिबुल अस्बाब है, यहीं कोई सबब पैदा फ़रमा देगा, जिस से तुम्हारी येह आरज़ू पूरी हो जाएगी।"

माँ की बात मानी थी, सबब कैसे ना पैदा होता ? अल्लाह तआ़ला ने वहीं ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام को भेज कर आप की तालीम का इंतिज़ाम फ़रमा दिया।[1]

ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام से इ़ल्मे लदुन्नी ह़ासिल कर लेने के बाद आप का इ़ल्मी जाहो जलाल अपने अक़रान व मुआ़सिरीन से बहुत बुलन्द हो गया और आप का शुमार अपने वक़्त के जय्यिद उ़लमा में होने लगा।

ह़ज़रते मख़दूमे महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बचपन ही से बड़े अख़्लाक़ मन्द और सूफ़ियाना मिज़ाज के ह़ामिल थे, अपने बुज़ुर्गों का ग़ायत दर्जा अदबो एह़तिराम किया करते थे, इसी लिए बड़े बूढ़े भी आप को क़द्र की निगाह से देखते थे।

(1) ज़मीरुल इन्सान लि इज़दियादि इश्तियाक़िल मुहिब्बीन इला ज़िक्रिर्रहमान, सफ़हा: 7 ता 10, अज़: मौलाना इब्राहीम मदनी, मतबआ़ शिहाबिया, बम्बई 1323 हिजरी / 1906 ईसवी

एक मरतबा ऐसा हुवा कि इ़शा की नमाज़ हो चुकी थी, आप की वालिदा ने आप से पीने के लिए एक गिलास (Glass) पानी मांगा, आप पानी लेने चले गए, लौटे तो देखा कि वालिदा की आंख लग गई है। इस छोटी सी उ़म्र में आप के ज़ेहन में येह बात आई कि अगर अम्मी को बेदार करता हूं तो उन की नींद में ख़लल वाक़ेअ़ होगा और ऐसा करने से अम्मी की शान में बे अदबी हो जाएगी। इस लिए वालिदा को जगाया नहीं और सारी रात पानी का गिलास लिए खड़े रहे कि कहीं बीच रात अम्मी की आंख खुल गई तो पानी ना मिलने पर परेशान ना हों।

सुब्ह़ सह़री के वक़्त वालिदा की आंख खुली तो ह़ज़रते मख़दूम को अपने पास देख कर अचम्भा हुवा कि येह अभी तक क्यूं खड़ा है, पूछा कि बेटा पानी ले कर कब से खड़े हो ?

आप ने अ़र्ज़ की: "अम्मी जान, सोने से पहले आप ने पानी त़लब फ़रमाया था, उसी वक़्त से खड़ा हूं और आप के बेदार होने का इनतिज़ार कर रहा हूं, ताकि आप की ख़िदमत में पानी पेश कर सकूं।"

जब वालिदा साह़िबा ने येह सुना तो बहुत ख़ुश हुईं कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें एक फ़रमांबरदार लड़का अ़ता किया है। मारे ख़ुशी के फ़ौरन बिस्तर से उठीं, वुज़ू कर के दोगाना अदा किया और अपने रब से मुनाजात करने लगीं:

"ऐ अल्लाह मैं अपने इस बच्चे से राज़ी हूं, तू भी राज़ी हो जा और इसे अपना क़ुर्ब अ़त़ा फ़रमा कर अपने वलियों में शामिल कर ले।"[(1)]

(1) ज़मीरुल इन्सान लि इज़्दियादि इश्तियाक़िल मुहि़ब्बीन इला ज़िक्रिर्रह़मान, सफ़ह़ा: 5-6, अज़: मौलाना इब्राहीम मदनी, मत़बअ़ा ए शिहाबिया, बम्बई 1323 हिजरी / 1906 ईसवी

येह माँ की दुआओं का ही असर था कि आप वली ए कामिल और क़ुतबुल अक़ताब बन कर चमके।

आप बेहद फ़य्याज़ और सख़ी थे। हाजत मंदों की हाजत रवाई करना, भूकों को खाना खिलाना आप की आदते करीमाना थी। नाना का शुमार महाइम (Mahim) के बड़े ताजिरों में होता था मगर आप के दिल में माल की महब्बत ने कभी जगह ना पाई, बल्कि हमेशा ग़रीबों की इमदाद करने में दोनों हाथों से फ़य्याज़ी करते रहे। आप के दौलत क़दे पर मेहमानों का हुजूम रहता और आप उन्हें तरह तरह के लज़ीज़ खाने खिला कर ख़ुश होते। क्या हिंदू क्या मुसलमान आप के अख़्लाक़े करीमाना के सब ही क़ाइल थे।[1]

बक़ौल मौलाना बाक़िर आगाह साहिब:

"आप उलूमे अक़लिया व नक़लिया में कमाल को पहुंचे हुवे थे, तौहीदे वुजूदी और उलूमे तरीक़त में आला यादगार और अल्लाह तआला की ज़ातो सिफ़ात में मुसतग़र्क़ रहने और लोगों से कनारा कशी इख़्तियार करने में इन्तिहा को पहुंचे हुवे थे। आप से बड़ी बड़ी करामात, उम्दा औसाफ़, पसन्दीदा ख़सलतें और बुज़ुर्ग सिफ़तें ज़ाहिर हुईं।"[2]

अल्लाह तआला की ज़ात में इस्तिग़राक़ व महविय्यत और यादे इलाही में इनहिमाक का अंदाज़ा मुन्दरिजा ज़ैल वाक़िए से लगाइये।

साहिबे तफ़सीरे रहमानी हज़रते शैख़ अली महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه पर मुराक़बा व इस्तिग़राक़ की कैफ़िय्यत ग़ालिब थी। बादशाहे वक़्त की बहन आप के निकाह में थी। एक दिन शाही बेगमात बादशाह की बहन से

(1) अल इहसान, सफ़हा: 98, मजल्लतुन सदरत मिनल जामिअतिल आरिफ़िय्या, इलाहाबाद, अल हिन्द, सनत: 2012 ईसवी

(2) नफ़हतुल अम्बरिय्यह, अज़: मौलाना बाक़िर आगाह, बहवाला तारीख़ुन्नवाइत, बाब: 4, फ़स्ल: 2, सफ़हा: 360

नोट: अस्ल इबारत अरबी ज़बान में है, हम ने तर्जमे पर इकतिफ़ा किया है। महाइमी

मुलाक़ात के लिए शैख़े महाइमी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡه के घर आईं। शैख़ चौखट पर बैठे हुवे थे। बेगमात को अंदर आने में तरद्दुद हुवा।

शैख़ की वालिदा ह़ाज़िर थी, फ़रमाया : “क्यूं ठहरी हो ? चली आओ, क्या रुकावट है ?”

उन लोगों ने कहा: “हम कैसे आएं ? शैख़ चौखट पर बैठे हैं, हमें देख लेंगे।”

वालिदा ने फ़रमाया: “वोह तो बे ख़बरी के अ़ालम में हैं, उन्हें तुम्हारी ख़बर है ना दुनिया व माफ़ीहा[1] की।”

येह सुन कर शाही बेगमात अंदर दाख़िल हो गईं और आप की वालिदा से इस का सुबूत मांगा। वालिदा साहिबा ह़ज़रते मख़दूमे महाइमी के पास आईं और फ़रमाया: “अ़ली ! तुम येह तहबंद पहन लो और अपने कपड़े धोने के लिए दे दो।”

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

ह़ज़रते मख़दूमे महाइमी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡه उस वक़्त साफ़ सुथरे कपड़े पहने हुवे थे, फ़ौरन तहबंद पहन कर कपड़े वालिदा को दे दिए। कुछ देर बाद आप की वालिदा दूसरे मैले कपड़े ले कर आईं और उन कपड़ों को पहनने के लिए कहा। आप ने वोह मैले कपड़े पहन लिए। आप को इस बात की ख़बर ना थी कि कौन से कपड़े पहनें कौन से उतारें।[2]

(1) **यानी**: दुनिया और दुनिया से मुतअ़ल्लिक़ चीज़ें

(2) ह़बलुल मतीन फ़ी तक़वियतिल यक़ीन, अज़: शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब मुत्तक़ी शाज़िली, बह़वाला तर्जमतुल मुसन्निफ़, क़लमी नुस्ख़ा तफ़्सीरे महाइमी, क़ुतुबख़ाना दरगाह ह़ज़रत पीर मुह़म्मद शाह अह़मदाबाद

नोट: अस्ल इ़बारत फ़ारसी ज़बान में है, हम ने तर्जमे पर इकतिफ़ा किया है। **महाइमी**

मज़कूरा इबारत से ह़ज़रते मख़दूमे महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के फ़नाफ़िल्लाह होने की कैफ़िय्यत तो सामने आती ही है। साथ ही साथ येह भी पता चलता है कि आप ने गोशा नशीनी की ज़िंदगी इख़्तियार नहीं की बल्कि सुन्नते नबवी صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर अ़मल करते हुवे रिश्ता ए इज़्दिवाज से मुन्सलिक हुवे और ता ह़यात ख़ल्क़े ख़ुदा की ख़िदमत करते रहे।

मसनदे तदरीस

अ़हदे मख़दूमे महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه में गुजरात (Gujarat) और इस के मुज़ाफ़ात में कई मदारिस का वुजूद हो चुका था। "तारीख़ुल औलिया" के मुत़ाले से मालूम होता है कि "कोकन (Kokan) में उ़लूमे ज़ाहिरी व बात़िनी का चराग़ ह़ज़रते फ़क़ीह मख़दूमे महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने रौशन किया था।"[(1)]

बक़ौल सय्यिद इमामुद्दीन गुलशन आबादी:

"महाइम में मद्रसा था। वहां त़लबा को आप दर्से उ़लूमे ज़ाहिरी व बात़िनी दिया करते थे और अक्सर औक़ात तसानीफ़ में गुज़ारते थे।"[(2)]

तलामिज़ा

येह बात मुसल्लम है कि त़लबा की एक अच्छी ख़ासी जमाअ़त ने आप के सामने ज़ानू ए तलम्मुज़ तह किया है। मगर सिवाए एक दो शागिर्द के किसी और का तज़किरा नहीं मिलता। सय्यिद इमामुद्दीन गुलशन आबादी ने अपनी किताब "तारीख़ुल औलिया" में ह़ज़रते मख़दूमे महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के एक शागिर्द ह़ज़रते शैख़ मुह़म्मद सई़द कोकनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का तज़किरा कुछ इस त़रह़ किया है:

(1) तारीख़ुल औलिया, अज़: इमामुद्दीन गुलशन आबादी, सफ़ह़ा: 443

(2) बरकातुल औलिया, अज़: इमामुद्दीन गुलशन आबादी, सफ़ह़ा: 36

"आप, शागिर्दे रशीद मौलाना फ़क़ीह मख़्दूम अ़ली महाइमी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हैं। आप के इ़ल्मे ह़क़ायक़ व तसव्वुफ़ में कई रसाइल अ़रबी ज़बान में मौजूद हैं। और ज़िलअ़ कोकन में येह दो शख़्स मिस्ले आफ़ताब व माहताब के हुवे हैं, जिन के वुजूदे ज़ी जूद[1] से सैकड़ों गुमराहों ने फ़ैज़ पाया और चराग़ इ़ल्मे ज़ाहिरी व बातिनी का, इस मुल्के कोकन में आप से रौशन हुवा। सिने वफ़ात मालूम नहीं, क़ब्र आप की रत्नागीरी में है।"[2]

आप के एक और शागिर्द मुह़म्मद बिन अबू बक्र मख़्दूमी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रमज़ानुल मुबारक 825 हिजरी / 1422 ईसवी से 25 ज़ुल ह़िज्जा तक कुल चार महीने महाइम में मुक़ीम थे। आप ने अ़रबी सर्फ़ व नह़व में एक ला जवाब किताब तस्नीफ़ की है। मख़्दूमी का लक़ब ह़ज़रते मख़्दूम अ़ली महाइमी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इरादते इ़ल्मी और निस्बते रूह़ानी के सबब पड़ा।[3]

बहैसिय्यते क़ाज़ी

जैसा कि मा सबक़ से ज़ाहिर है कि सुलत़ान अह़मद शाह और ह़ज़रते मख़्दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के दरमियान रिश्तेदारी थी। सुलत़ान ने अपनी बहन की शादी ह़ज़रते मख़्दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से करा दी थी, जिस की वज्ह से आना जाना भी होता था, ज़ाहिर है कि सुलत़ान अह़मद शाह ने ह़ज़रते मख़्दूमे महाइमी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को क़रीब से देखा होगा और जब उस ने आप की आला क़ाबिलिय्यत, फ़क़ीहाना बसीरत और तक़्वा व त़हारत का मुशाहदा किया होगा तो आप को मन्सबे क़ज़ा पर मुक़र्रर कर दिया होगा।

(1) **यानी:** आप के बा फ़ैज़ वुजूद से

(2) तारीख़ुल औलिया, अज़: इमामुद्दीन गुलशन आबादी, सफ़्ह़ा: 743

(3) तारीख़े कोकन, सफ़्ह़ा: 316, अज़: डाक्टर मोमिन मुह़युद्दीन, मत़बूआ: नक़्शे कोकन पब्लीकेशन ट्रस्ट, मुंबई 9

बम्बई गज़ीटर (Bombay Gazetteer) में लिखा है:

सूफ़ी मख़दूम फ़क़ीह जवानी के कई साल सफ़र और मुताले में गुज़ारने के बाद माहिम के मुसलमानों के क़ाज़ी मुक़र्रर हुवे। [1]

फ़िक़ही मसलक

आप किस फ़िक़ही मसलक से तअ़ल्लुक़ रखते थे ? इस सिलसिले में इख़्तिलाफ़ है, अक्सर तज़किरा निगारों ने आप को शाफ़िइयुल मस्लक क़रार दिया है, कुछ ने आप के ह़म्बली और ह़नफ़ी होने का क़ौल भी नक़्ल किया है, जब कि बाज़ ने आप को मर्तबए इजतिहाद पर फ़ाइज़ माना है। [2]

लेकिन ज़ियादा राजेह़ यही क़ौल है कि आप शाफ़िई थे इस लिए कि तफ़सीरे महाइमी में आप मसाइल की तौज़ीहो तशरीह़ फ़िक़्हे शाफ़िई की रौशनी में ही करते हैं। तफ़सीरे महाइमी में मिसालें बहुत सी मिल जाएंगी, यहां हम सिर्फ़ एक मिसाल पर इकतिफ़ा हैं।

मसलन आप फ़िक़्हे शाफ़िई के मुवाफ़िक़ "क़ुरूअ़" से मुराद त़ोहर लेते हैं।

(يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوْءٍ) اَيْ مَضْيَ ثَلَاثَةِ اَطْهَارٍ. (٣)

(1) The Gazetteer of Bombay City and Island, Vol: 3, page 301, Printed at the Times Press, 1910

(2) तीन तह़क़ीक़ी मक़ाले, सफ़ह़ाः 78, मुरत्तिब अ़ब्दुस्सत्तार दलवी, मक़ाला निगार जमीला शौकत / हदयतुल आरिफ़ीन फ़ी अस्माइल मुअल्लिफ़ीन व आसारिल मुसन्निफ़ीन, जिल्दः 1, सफ़ह़ाः 730, दारु इह़याइत्तुरासिल अ़रबी, बैरुत, लुबनान

(3) तफ़्सीरे महाइमी, जिल्दः 1, सफ़ह़ाः 82, मत़बूआ: बोलाक़, मिस्र

यानीः "(मुतल्लक़ा औरत अपने आप को तीन क़ुरूअ तक रोके रखें) यानी तीन तोहर गुज़रने तक।"

सूफ़ियाना मसलक

हज़रते मख़दूमे महाइमी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) का तअ़ल्लुक़ किस मशरबी सिलसिले से था, उस का पता नहीं चलता, हां इतना ज़रूर है कि कुछ तज़किरा निगारों ने आप को "उवैसी" लिखा है। चुनान्चे डाक्टर सय्यिद कमालुद्दीन ऐच क़ादिरी ने लिखा हैः

He was a follower of the Owaisi path [(1)]

क़ाज़ी यूसुफ़ मरघे साहिब लिखते हैः

उवैसी शरफ़, रासिख़ुल इ़ल्म हैं   जमाली सिफ़त, कामिलुल हिल्म हैं [(2)]

शैख़ मुहयुद्दीन इब्ने अ़रबी की पैरवी

लेकिन हक़ीक़त यही है कि आप शैख़े अकबर हज़रत मुहयुद्दीन इब्ने अ़रबी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मसलके वहदतुल वुजूद के मानने वाले थे। शैख़े अकबर के नज़रिया ए वहदत के मानने वालों को सूफ़िया ए मुवह्हिदा कहा जाता था, चुनान्चे शैख़े मुहक़्क़िक़ शाह अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपनी किताब अख़बारुल अख़यार में आप के मुतअ़ल्लिक़ लिखते हैं:

(1) हज़रते मख़दूम अ़ली माहिमी (क़ुतबे कोकन), ब ज़बाने इंग्लिश, सफ़हाः 24

(2) ज़ीनतुल मजालिस, सफ़हाः 49, मतबूआ: बइशतिराक "अशरफ़िया इस्लामिक फ़ाउन्डेशन, हैदराबाद" - "अस्लाफ़ पब्लीशर्ज़, कल्याण"

वी अज़ उ़लमा ए सूफ़िया ए मुवह़्ह़िदह अस्त
आ़लिम बूवद बउ़लूमे ज़ाहिरो बात़िन
साह़िबुत्तस्नीफ़ातिर्राइक़ह वत्तालीफ़ातिल्लाइक़ह [1]

यानी : आप उ़लमा ए सूफ़िया ए मुवह़्ह़िदा (शैख़े अकबर के नज़रिया ए वह़दत के मानने वालों) में से हैं, उ़लूमे ज़ाहिरी व बात़िनी के आ़लिम और उ़म्दा और मुफ़ीद किताबों के मुसन्निफ़ हैं।

मुह़म्मद ह़सन ग़ोसी मंडवी "गुलज़ारे अबरार" में लिखते है:

"दोनों जहां के ह़क़ाइक़ो असरार के आप आरिफ़ थे। सूफ़ियों की इस्तिलाह़ में आप शैख़ मुह़युद्दीन इब्ने अ़रबी और शैख़ सदरुद्दीन क़ोनवी के पैरव हैं। और उन दोनों बुज़ुर्गों की तस्नीफ़ात पर आप ने उ़म्दा शर्हें लिखीं और संजीदा ह़ाशिये लगाए हैं।" [2]

सुब्ह़तुल मरजान फ़ी आसारि हिन्दूस्तान में है:

"وَالشَّيْخُ عَلِيٌّ كَانَ مِنْ نَحَارِيْرِ الزَّمَانِ وَ اَصْحَابِ الذَّوْقِ وَ الْعِرْفَانِ، مُثْبِتًا لِلتَّوْحِيْدِ الْوُجُوْدِي، مُقْتَفِيًا بِالشَّيْخِ مُحْيِ الدِّيْنِ ابْنِ الْعَرَبِيِّ." (٣)

यानी शैख़ अ़ली महाइमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ह़ाज़िक़े ज़मां, साह़िबे ज़ौक़ो इ़रफ़ान में से थे। तौह़ीदे वुजूदी का इस्बात करने वाले और शैख़ इब्ने अ़रबी के नक़्शे क़दम पर चलने वाले थे।

(1) अख़बारुल अख़यार, अज़: शाह अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी, सफ़ह़ा: 179, मत़बूआ़ देहली 1332 हिजरी

(2) गुलज़ारे अबरार, अज़: मुह़म्मद ह़सन ग़ोसी मंडवी, सफ़ह़ा: 141

(3) सुब्ह़तुल मरजान फ़ी आसारि हिन्दूस्तान, सफ़ह़ा: 90, अज़: ग़ुलाम आज़ाद बिलगिरामी, मत़बूआ़: माहदुद्दिरासातिल इस्लामिया, जामिआ़ अ़लीगढ़

वफ़ात

एक त़वील मुद्दत तक आ़लम को अपने कमालाते ज़ाहिरी व बात़िनी से फ़ैज़याब करते रहे और आ़लमे इस्लाम में रूह़ानिय्यत और रुजूइलल्लाह का आ़लमगीर ज़ौक़ पैदा फ़रमाते रहे। बिल आख़िर 8 जुमादल आख़िरह 835 हिजरी / 1431 ईसवी को जुमुआ़ की शब 59 साल की उ़म्र पा कर वफ़ात पाई और बरोज़ जुमुआ, नमाज़े जुमुआ़ के बाद माहिम ही में अपने अक़रिबा के क़ब्रिस्तान में मदफ़ून हुवे।(1)

क़लमी यादगारें

ह़ज़रते मख़्दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी ज़िंदगी का बेशतर ह़िस्सा तस्नीफ़ो तालीफ़ में गुज़ारा, आप ने सौ (100) से ज़ाइद क़लमी यादगारें छोड़ीं, जिन में बेशतर तसव्वुफ़ के दक़ीक़ मसाइल पर मुश्तमिल थीं, मगर अफ़सोस कि अक्सर ह़वादिसे ज़माना की नज़्र हो गईं, कुछ किताबें बोसीदा ह़ालत में बची थीं तो साबिक़ मुतवल्लियों ने उन्हें अ़रबी किताब समझ कर दफ़्न कर दिया, किस क़दर इ़ल्मी किताबें रही होंगी जो फ़ौत हुईं, दिल ख़ून के आंसू ना रोए तो और क्या करे ?

अब आइए, एक नज़र इस पर भी डाल लें कि ह़ज़रते मख़्दूमे महाइमी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की कितनी किताबें दस्तयाब हैं, इन में से कितनी किताबों पर काम हो चुका है और कितनी किताबों पर काम करना बाक़ी है।

(1) मासिरुल किराम तारीख़े बिल गिराम (मुतर्जम) अज़: ग़ुलाम अ़ली आज़ाद बिलगिरामी मत़बूआ़ जामिअ़तुर्रज़ा, बरेली, सफ़्ह़ा: 296 / सुब्ह़तुल मरजान फ़ी आसारि हिन्दूस्तान, सफ़्ह़ा: 90, अज़: ग़ुलाम आज़ाद बिलगिरामी, मत़बूआ: माहदुद्दिरासातिल इस्लामिया, जामिआ़ अ़लीगढ़ / तारीख़े कोकन सफ़्ह़ा: 316, अज़: डाक्टर मोमिन मुह़युद्दीन, मत़बूआ़ नक़्शे कोकन पब्लीकेशन ट्रस्ट, मुंबई 9

जिन किताबों पर काम हो चुका है

(1) मिरआतुल ह़क़ाइक़

(2) इराअतुद्दक़ाइक़ फ़ी शर्हि मिरआतुल ह़क़ाइक़

इन दोनों किताबों का तर्जमा राक़िम ने “मरातिबे वजूद” के नाम से किया है, जो “अशरफ़िया इस्लामिक फ़ाउन्डेशन, हैदराबाद” Ashrafiya Islamic Foundation Hyderabad) और “अस्लाफ़ पब्लीशर्ज़, कल्याण” (Aslaaf Publishers, Kalyan) के बाहमी इश्तिराक से शाएअ़ हो चुका है।

(3) ग़ायतुल वुजूद बि मारिफ़ति वह़दतिल वुजूद

(4) शर्हे सय्यिदिल इस्तिग़फ़ार

इन दोनों किताबों का तर्जमा और अ़रबी मतन की तह़क़ीक़ राक़िम ने की है, तर्जमा और मतन दोनों एक साथ, मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर (ज़ेरे इंतिज़ाम मीनारा मस्जिद ट्रस्ट, मुंबई) से शाएअ़ हो गया है।

जिन किताबों पर काम करना बाक़ी है

(5) तबसीरुर्रह़मान व तबसीरुल मन्नान बाज़ु मा युशीरु इलाइअजाज़िल क़ुरआन (अल मारूफ़ बिह “तफ़्सीरुल महाइमी” व “तफ़्सीरुर्रह़मानी”)

इस किताब के दो मतबूए़ और दो क़लमी नुस्ख़े राक़िम के पास मौजूद हैं। एक क़लमी नुस्ख़ा कुतुबख़ाना दरगाह ह़ज़रत पीर मुह़म्मद शाह अह़मदाबाद में मौजूद है। किताबत का साल 1159 हिजरी है। बर्मा (Burma) के मौलाना ह़बीबुल बशर ख़ैरी رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने सूरए मरयम तक

का तर्जमा किया था, जो कैप्टन अ़ब्दुस्सत्तार अह़मद पागरकर और सूफ़ी शौकत हुसैन फ़रीदी की मेह़नत, हिम्मत और लगन से, राक़िम की तस्ह़ीह़ और नज़रे सानी से गुज़र कर 7 जिल्दों में शाएअ़ हो चुका है, तर्जमा काफ़ी शानदार है और मुतर्जिम मौसूफ़ के तर्जमा करने का अन्दाज़ भी बहुत अच्छा है। मगर दिक़्क़त येह है कि अगर अ़रबी नुस्ख़ा सामने मौजूद ना हो तो तर्जमा और ख़ैरी साह़िब की इज़ाफ़ा शुदा इ़बारत में तमीज़ करना मुश्किल है।

(6) अदिल्लतुत्तौह़ीद

(7) अजिल्लतुत्ताईद फ़ी शर्ह़ि अदिल्लतुत्तौह़ीद

इन दोनों किताबों के अ़रबी मत़बूआ़ नुस्ख़े राक़िम के पास मौजूद हैं, जिन्हें यूसुफ़ खट खट्टे साह़िब ने मत़बअ़ए शिहाबिया, बम्बई से शाएअ़ करवाया था।

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

(8) अन्नूरुल अज़हर फ़ी कशफ़िल क़ज़ाइ वल क़द्र

(9) अज़्ज़ोउल अज़हर फ़ी शर्ह़िन्नूरिल अज़हर

इन दोनों किताबों के अ़रबी मत़बूआ़ नुस्ख़े राक़िम के पास मौजूद हैं। जिन्हें यूसुफ़ खट खट्टे साह़िब ने मुकम्मल किताब दस्तयाब ना होने की वज्ह से नाक़िस ही मतबअ़ए शिहाबिया, बम्बई से शाएअ़ करवाया था।

(10) ख़ुसूसुन्निअ़म फ़ी शर्ह़ि फ़ुसूसिल ह़िकम

इस का एक क़लमी नुस्ख़ा दारुल उ़लूम देवबन्द में मौजूद है।

ज़ख़ामत 651 सफ़्हात है और अब दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या से 750 सफ़्हात पर मुश्तमिल शाएअ़ हो चुका है। मतबूआ़ नुस्ख़ा राक़िम के पास मौजूद है।

(11) अर्रुतबतुर्रफ़ीअ़ह फ़िल जमइ़ वत्तौफ़ीक़ि बैन असरारिल ह़क़ीक़ति व अनवारिश्शरीअ़ह

इस का एक क़लमी नुस्ख़ा कुतुबख़ाना दरगाह ह़ज़रत पीर मुह़म्मद शाह अह़मदाबाद में मौजूद है। जो ह़ज़रते मख़दूम की ह़यात में यानी 822 हिजरी / 1419 में तह़रीर किया गया है और एक क़लमी नुस्ख़ा राक़िम के पास भी मौजूद है।

(12) इमहाज़ुन्नसीह़ा

इस का एक क़लमी नुस्ख़ा ख़ुदा बख़्श ओरीएंटल लाइब्रेरी, पटना (Khuda Baksh Oriental Libaray, Patna) मैं मौजूद है।

(13) मशरउ़ल ख़ुसूस इला मआ़नियिन नुसूस

येह किताब दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या से 270 सफ़्हात पर मुश्तमिल शाएअ़ हो चुकी है। येह नुस्ख़ा राक़िम के पास मौजूद है।

(14) ज़वारिफ़ुल लत़ाइफ़ फ़ी शर्हि अ़वारिफ़िल मआ़रिफ़

इस का एक नुस्ख़ा कुतुबख़ाना मुह़म्मदिया जामेअ़ मस्जिद, बम्बई में मौजूद है। और दीगर मख़त़ूते ह़ैदराबाद, रामपूर और बांकीपूर पटना के कुतुबख़ानों में मौजूद है। एक क़लमी नुस्ख़ा राक़िम के पास भी मौजूद है।

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

(15) तर्जमतु लमआतिल इराक़ी

(16) शर्हु लमआतिल इराक़ी

इस का एक क़लमी नुस्ख़ा कुतुबख़ाना दरगाह ह़ज़रत पीर मुह़म्मद शाह अह़मदाबाद में मौजूद है।

(17) अल फ़िक़्हुल मख़दूमी

येह किताब उर्दू तर्जमे के साथ 1314 हिजरी / 1897 ईसवी में शाएअ़ हो चुकी है। इस का एक तर्जमा मुफ़्ती मह़मूद अख़्तर क़ादिरी साह़िब ने भी किया है। येह दोनों नुस्ख़े राक़िम के पास मौजूद हैं।

जिन किताबों के सिर्फ़ नाम मिलते हैं

(18) असरारुल फ़िक़्ह

(19) इस्तिजलाउल बसर फ़िर्रद्दि अ़लस तिक़्साइन्नज़र

(20) अल फ़तावल मख़दूमिया

(21) इनआ़मुल मलिकिल अ़ल्लाम बिअह़कामि हुकमिल अह़काम

(22) अल वुजूद फ़ी शर्हि अस्माइल माबूद

(23) तनवीरुल जिनान फ़ी तफ़्सीरिल फ़ातिह़ा

(24) शर्हुल क़सीदतिर्राइय्यह

(25) अर्रिसालतुल अ़जीबा

इस किताब का कुछ इबतिदाई ह़िस्सा "सुब्ह़तुल मरजान फ़ी आसारि हिन्दूस्तान" में शाएअ़ हुवा था।

अल्लाह करे कि हज़रते मख़्दूमे महाइमी رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡه की जुम्ला किताबें दस्तयाब हो जाएं और उन सब पर जदीद अन्दाज़ में काम हो। अल्लाह तआला मौला अली रिसर्च सेन्टर के जुम्ला वाबस्तगान को सबात क़दमी बख़्शे। آمِیۡن بِجَاہِ سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡن صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

महाइमी

15 रजब 1445 हिजरी / 1 फ़रवरी 2024 ईसवी

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

मीनारा
मस्जिद में आराम फ़रमां
ह़ज़रत मुफ़्ती सय्यिद अ़ब्दुल फ़त्ताह़
गुलशन आबाद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ
(विसाल 15 सफ़र 1323 हि / 1905 ई़)
के नाम

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

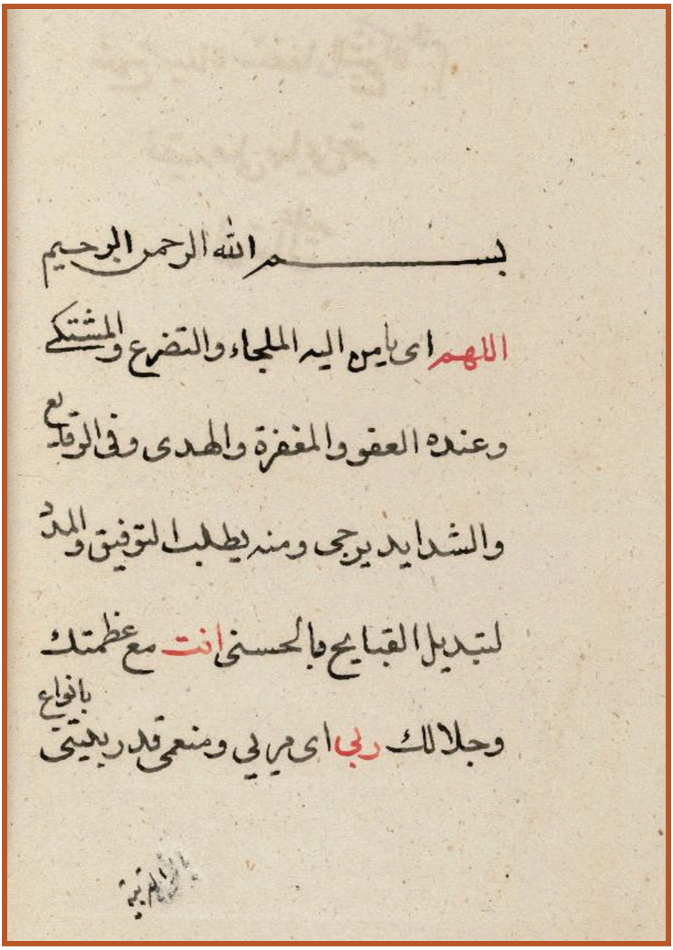

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी, अमेरीका में मौजूद
“शर्हु सय्यिदिल इस्तिग़फ़ार” के मख़तूते का पहला सफ़हा

واستغفرك للمعاصي كلها يا من بابه مفتوح للتائبين ومناديه ينادي
هل من مستغفر فاغفر له وهل من تائب فاتوب عليه كرما ولطفا
وندمت على ما فعلت وقلت مما لا ترضاه وعزمت على ان لا اعود
اليه اصلا واذا انبت اليك واستغفرك يا من يحب التائبين
والمستغفرين فاغفرلي المغفرة الموعودة للمستغفرين ولوالدي
ولجميع عصاة المؤمنين والمسلمين وارحمني وتب علي واعف عني يا من
اذا عفى سيئا الكل لم ينقص من ملكه شيء عفو به جميع ذنوبي اذ لو لقا
واحدا ولو من نوع هين يضر وانما اطلب منك بالتوبة يا من اذا اشتمل
على غفران الذنوب والعفو عنها دون غيرك انه لم يكن بيد واحد
سواك غفرانها ولا بشيء دونها اذ لا يغفر الذنوب كيف وما
سواك مملوك لك والمملوك لا يقدر على ابراء حق المالك ومن حلمك انت مسك
وعظيم لطفك التام بالعباد ايضا جعلت التوبة الى العاصي دون
غيره ووعدت الرحمة والعفو والغفران عليها لكن لا جلب نفع
عنهم ولا لدفع ضر عنك بل لنجاتهم وفلاحهم يوم يفر المرء من اخيه
وامه وابيه وصاحبته وبنيه لكل امرئ منهم يومئذ شان
يغنيه من شدة هوله وعظيم بلائه يقول الانبياء والمرسلون صلوات
الله وسلامه عليهم يا رب نفسي نفسي فمن على هذا الوجه بعد مساعدة الحال المقال
توبته واستغفاره لا محالة يقبل منه ويغفر له لانه توبة واستغفار تام
جميع الاستغفارات راجعة اليه اذ ما من استغفار الا وفيه شيء منه فهذا

जामेअ़ मस्जिद मुंबई की लाइब्रेरी "कुतुबख़ाना ए मद्रसा ए मुहम्मदिया" में मौजूद "शर्हु सय्यिदिल इस्तिग़फ़ार" के मख़तूते का एक दरमियानी सफ़हा

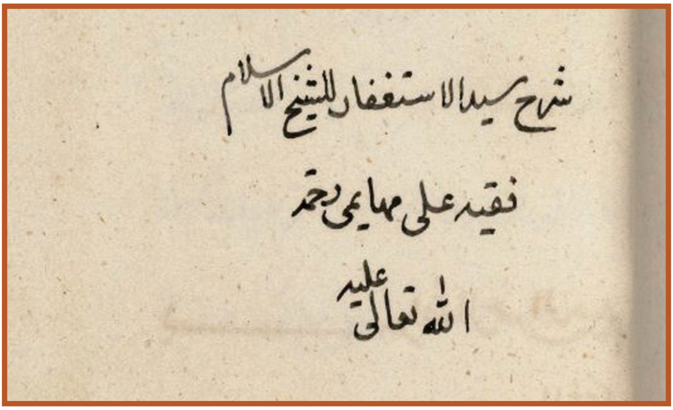
شرح سید الاستغفار للشیخ الاسلام
فقیہ علی مہایمی رحمۃ
اللہ تعالیٰ علیہ

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी, अमेरीका से ह़ासिल शुदा मख़त़ूते के टाइटल पेज पर किताब से मुतअ़ल्लिक़ येह इ़बारत लिखी हुई है।

MAULA ALI RESEARCH CENTRE

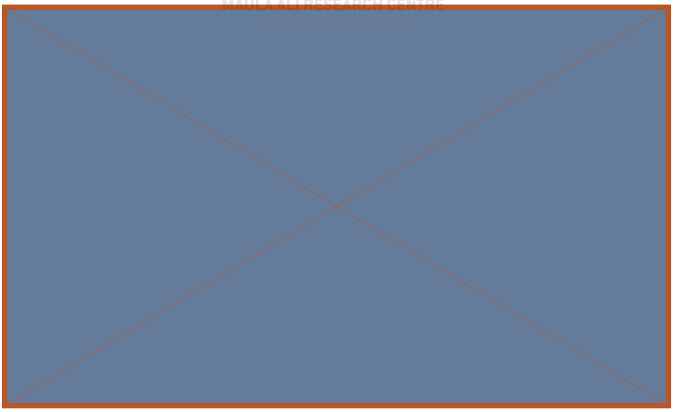

“कुतुबख़ाना मद्रसा ए मुह़म्मदिया” से ह़ासिल शुदा मख़त़ूते के आख़िरी सफ़ह़े पर मुसन्निफ़ से मुतअ़ल्लिक़ येह इ़बारत लिखी हुई है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ،

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ،

خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُكَ،

وَاَنَا عَلٰی عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ،

اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ،

اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ،

وَاَبُوْءُ بِذَنْبِیْ، فَاغْفِرْلِیْ؛

فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ.

MAULA ALI RESEARCH CENTRE

दुआ ए सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

ऐ अल्लाह ! तू मेरा रब है,

तेरे सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं,

तू मेरा ख़ालिक़ है,

मैं तेरा बन्दा हूं,

तेरे अहदो पैमां पर क़ाइम रहने की कोशिश कर रहा हूं,

अपने करतूत की बुराईयों से तेरी पनाह चाहता हूं,

तेरी नेमतों का मुझे इक़रार व एतिराफ़ है,

मैं अपने गुनाहों से तौबा कर रहा हूं,

मेरे मौला मुझे बख़्श दे ;

क्यूंकि गुनाहों को बख़्शने वाली ज़ात सिर्फ़ तेरी है।

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

ऐ मालिको मौला !

तेरी ही पनाह सब मांगते हैं,

तेरे ही आगे सब गिड़गिड़ाते हैं,

तेरे ही ह़ुज़ूर अपनी इल्तिजाएं पेश करते हैं,

तू ही तो अ़फ़्वो दर गुज़र फ़रमाने वाला है,

हिदायत देने वाला है,

मुश्किलों और मुसीबतों में सब तुझी से उम्मीदें वाबस्ता करते हैं और बुराईयों को नेकियों में बदलने के लिए तौफ़ीक़ व इमदाद भी तुझी से मांगते हैं,

तू कितना अ़ज़ीम व जलील है !

तू मेरा रब,

मुझे पालने वाला,

मुझ पर इनाम फ़रमाने वाला है।

पैदाइश से ले कर अब तक तू ने मुख़्तलिफ़ मर्ह़लों में मेरी परवरिश फ़रमाई है, त़रह़ त़रह़ के इनआ़मो इकराम से नवाज़ा है।

मैं कितना हक़ीरो ज़लील हूं,

इबतिदा में नुतफ़ा था और एक दिन बदबूदार मुर्दार हो जाऊँगा,

मेरा तुझ पर कोई ह़क़ नहीं,

इस के बावजूद मेरी पूरी ज़िंदगी का कोई लम्ह़ा ऐसा नहीं जिस में तेरा इनआ़मो इकराम और तेरी बन्दा नवाज़ी शामिले ह़ाल ना रही हो।

तेरे सिवा ना कोई मेरा मुरब्बी (पालने वाला) है,

ना ही कोई मुनइ़म (इनआ़म करने वाला) ;

क्यूंकि जब तेरे सिवा कोई माबूदे हक़ीक़ी है ही नहीं,

तो तेरे सिवा कोई मुरब्बी व मुनइ़म हो ही नहीं सकता।

सब कुछ तेरी त़रफ़ से और तेरी वज्ह से है ;

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

- लिहाज़ा हर बन्दे पर वाजिब है कि हर ह़ाल में अपने रब के ह़क़ की रिआ़यत करे, उस का हुक्म माने और उस की मनअ़ कर्दा चीज़ों से बचता रहे; ताकि उस का शुमार शुक्र गुज़ार बन्दों में हो जाए -

तू ने मुझे हक़ीर पानी के ज़रीए अ़दम से वुजूद बख़्शा,

मुझे अच्छी सूरत अ़ता फ़रमाई,

साथ ही साथ मेरे अन्दर ऐसी क़ुव्वतो क़ुदरत रखी जिस के ज़रीए मैं काम भी कर सकता हूं और किसी काम से बाज़ भी रह सकता हूं।

तू ने मेरी उ़म्र दराज़ फ़रमाई,

- येह उ़म्र नेकियां कमाने की पूंजी है और उन नेकियों से जन्नत का हुसूल और रब की रिज़ा ह़ासिल होती है -

फिर मुझे आक़िलो बालिग़ किया।

मुझे इस्लाम की दौलत से माला माल कर के,

तू ने मुझ पर बेपनाह अह़सान किया,

इस्लाम ही सब से अच्छा और सब से कामिल तरीन दीन है।

तू ने रसूलाने इ़ज़ाम और अम्बिया ए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को भेज कर, उन पर किताबें नाज़िल फ़रमा कर,

और उन के इस दुनिया से रुख़्सत हो जाने के बाद,

उ़लमा ए सालिहीन के ज़रीए,

वोह चीज़ें मुकम्मल वज़ाह़त के साथ बयान कर दी हैं,

जिन की हमें दीनो दुनिया में ज़रूरत पड़ती है,

जिन पर अ़मल कर के इन्सान को सवाब मिलता है,

और जिन की ख़िलाफ़ वर्ज़ी के सबब वोह अ़ज़ाबे इलाही में गिरफ़्तार होते हैं।

येह तेरा ही करम व अह़सान है कि

तेरा बन्दा हर ह़ाल में,

चाहे दिन हो या रात,

सफ़र हो या ह़ज़र,

तंदुरुस्त हो या बीमार,

अपने आज़ा को इन कामों में लगा कर,

जिन के लिए वोह पैदा किए गए हैं,

तेरा शुक्र अदा करता रहता है,

फिर एक वक़्त ऐसा भी आता है कि,

तेरे शुक्रगुज़ार बन्दों में उस का शुमार होने लगता है।

- मगर येह भी एक हक़ीक़त है कि उस के इस शुक्र अदा करने की हैसिय्यत कुछ भी नहीं बल्कि अगर वोह ज़िंदगी भर भी इ़बादत करता रहे तब भी अल्लाह तआ़ला की सिर्फ़ इस नेमत का ह़क़ अदा नहीं कर सकता कि उस ने इसे अ़दम से वुजूद बख़्शा, येह बात और है कि उस की येह इ़बादत अ़बस व लग़्व भी नहीं होती -

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

इस लिए मुझ पर वाजिब है कि

अपने रब के अह़कामात पर साबित क़दम रहूं,

जिन कामों का रब ने हुक्म दिया है, उस की बजा आवरी और जिन कामों से रोका है, उस से इजतिनाब करता रहूं ;

क्यूंकि मैं बन्दा हूं और बन्दे पर वाजिब होता है कि अपने आक़ा की तमाम बातों को माने,

अगर वोह कोई हुक्म दे तो उसे फ़ौरन पूरा करे और अगर किसी बात से रोके तो रुक जाए ;

ताकि वोह डांट, फिटकार और सज़ा का मुस्तहिक़ ना हो बल्कि तारीफ़ो इनआ़मात का मुस्तहिक़ हो।

मेरे मौला !

मुझे अपने बन्दा होने का इक़रार है,

और बन्दे के लिए लाज़िम है कि वोह अपने मालिक के किसी हुक्म की मुख़ालफ़त ना करे, अगर्चे मालिक कितनी ही मामूली चीज़ का हुक्म क्यूं ना दे।

मगर

मेरे मौला !

तू येह जानता है कि मैं सच बोल रहा हूं,

मेरे अंदर इतनी भी इस्तित़ाअ़त नहीं कि मैं मनहिय्यात (1) से इजतिनाब कर के तेरे अ़हद पर क़ाइम रह सकूं,

और अ़वामिर (2) को बजा ला कर तेरे वादे पर साबित क़दम रह सकूं,

बल्कि मेरे काम तो तेरे अ़वामिर व मनहिय्यात के बरख़िलाफ़ होते हैं;

क्यूंकि मैं एक मामूली सा आदम ज़ाद हूं।

(1) जिन कामों से बचने का रब ने हुक्म दिया है।

(2) जिन कामों के करने का रब ने हुक्म दिया है।

ऐ मालिको मौला !

हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام कितने शरफ़ व अज़मत वाले थे,

तमाम फ़रिश्तों से ज़ियादा मुकर्रम थे,

अल्लाह सुब्हानहू व तआला के सिखाए हुवे थे।

पाक जगह, जन्नत में रहते थे,

फिर भी उन से एक ऐसा फ़ेल सरज़द हो गया, जिस पर उन्हें तम्बीह फ़रमाई गई और इस की वज्ह से उन्हें जन्नत से निकल कर ज़मीन पर उतरना पड़ा।

तो फिर मेरी क्या हैसिय्यत है,

मैं गुनाहों में डूबा हुवा,

ज़लीलो हक़ीर जाहिल इन्सान हूं,

येह मेरी कज रवी है,

- और अपने रब और अपने ख़ालिक़ के हुज़ूर येह मेरा इंतिहाई क़बीह फ़ेल है कि जिस का मैं खाता हूं और जिस से में अपनी ज़रूरतें पूरी करता हूं -

उसी से मैं येह कह रहा हूं कि

“मैं तेरे अहकाम की पाबन्दी नहीं कर सकता, तेरे अवामिर पर अमल और तेरे मनहिय्यात से इजतिनाब नहीं कर सकता।”

यक़ीनन येह ऐसा ज़ुल्म है जो मैं ख़ुद अपने आप पर कर रहा हूं,

MAULA ALI RESEARCH CENTRE

और येह कुफ़राने नेमत[1] भी है।

इस का तक़ाज़ा है कि मुझे सख़्त सज़ा मिले,

मगर येह तेरी बुर्दबारी है कि तू अ़ज़ाब नहीं फ़रमाता।

मगर मुझे मालूम है कि इस का अंजाम निहायत बुरा और सख़्त नुक़्सानदेह है,

इसी वज्ह से मैं तेरी पनाह व हि़फ़ाज़त चाहता हूं,

तेरी ही ज़ात तो वोह ज़ात है कि

जब उस से अमनो अमान की दुआ की जाए तो वोह हि़फ़ाज़त फ़रमाता है,

त़ाक़तो क़ुव्वत अ़ता फ़रमाता है,

उन चीज़ों में साइल की मदद फ़रमाता है जिस में उस का फ़ायदा है,

और दीनी और दुनियावी नुक़्सानदेह चीज़ों से बचा भी लेता है।

मेरे मौला !

मैं अपने काले करतूत के इ़ताबो अ़ज़ाब के शर से तेरी पनाह चाहता हूं

अपने इस क़ौल के शर से कि

"मैं तेरे अ़वामिर व नवाही[2] की इ़ताअ़त नहीं कर सकता"

और अपने इसी क़ौल के मुवाफ़िक़ अ़मल करने के शर से,

(तेरी पनाह चाहता हूं)

(1) नाशुक्री

(2) जिन कामों के करने और जिन कामों से बचने का रब ने हुक्म दिया है।

- क्यूंकि इस त़रह़ की ह़रकतों से रब की रह़मत से दूरी और मह़रूमी होती है और अगर मख़लूक़ के सामने इस का इज़हार कर दिया जाए तो रुस्वाई का सबब बनता है -

बल्कि येह हलाकत व मुवाख़ज़े पर मुहर लगा देने के बराबर है,

मुहर नहीं, बल्कि येह यक़ीनी हलाकत व मुवाख़ज़ा ही है ;

क्यूंकि गुनाहों और मआ़सी की ख़ासिय्यत ही यही होती है कि वोह हलाकत की त़रफ़ ले जाती है।

मगर

ऐ अरह़मुर्राह़िमीन !

तेरी रह़मत तेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब आ जाती है,

तू ने मेरे साथ ऐसा कुछ भी नहीं किया,

ना मुवाख़ज़ा किया ना अ़ज़ाब दिया,

बल्कि अपने फ़ज़्लो करम से मुझे मोहलत दी कि

मैं तौबा कर लूं,

अगर ऐसा ना करता तो मैं अपना अ़ज़ीम नुक़्सान कर बैठता।

येह भी तेरी उन अ़ज़ीम नेमतों में से एक अ़ज़ीम नेमत है,

जो तू ने दौलते इस्लाम से मालामाल फ़रमाने के बाद मुझे इ़नायत फ़रमाई।

ऐ सब के मालिक !

मुझे इस बात का एतिराफ़ है कि तू मुनइ़मे ह़क़ीक़ी है,

और इस का भी एतिराफ़ है कि

तू ने मुझे बेशुमार नेमतें अ़ता फ़रमा कर मुझ पर अह़सान फ़रमाया है, ख़ास कर उस वक़्त जब कि मैं ने तेरी ना फ़रमानी की और तेरे अह़काम की मुख़ालफ़त की।

और मैं इस का भी एतिराफ़ करता हूं कि मैं एक गुनाहगार नाफ़रमान बन्दा हूं।

इस बात का मुस्तह़िक़ हूं कि तेरी बारगाह से धुतकार दिया जाऊं,

मेरे साथ इस के अ़लावा और भी ऐसे मुआ़मलात होने चाहिए जो नाफ़रमानों के साथ होते हैं।

मुझे मालूम है कि तेरी मुख़ालफ़त करने के सबब तेरे नज़दीक मेरी कोई क़द्रो मंज़िलत नहीं होगी और तू ने जो मुझे अच्छे काम करने और बुरे काम से रुकने की क़ुदरत दी है, इस के बाद मेरे पास कोई उ़ज़्र भी बाक़ी नहीं रह जाता।

मगर

मेरे मौला!

अबुल बशर ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام से जब चूक हुई

तो तू ने उन के साथ इस त़रह़ बर्ताव किया

जैसा कि क़ुरआन में है:

﴿وَعَصٰۤى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ۝﴾

﴿ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ۝﴾

यानी

“और आदम से अपने रब की लग़्ज़िश हुई

तो बे मनाफ़ेअ़ रह गए

फिर बरगुज़ीदा किया उन्हें, उन के रब ने,

तो रुजूअ़ फ़रमाई उन पर (रह़मत से),

और राह दिखाई।”[1]

येह भी तेरा ही फ़रमान है:

﴿فَتَلَقّٰۤی اٰدَمُ مِنۡ رَّبِّهٖ کَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَیۡهِ ؕ﴾

यानी

“पस आदम ने रब से चन्द कलिमात सीख लिए पस अल्लाह ने मेहरबानी से उन पर रुजूअ़ फ़रमाया।”[2]

(ह़ज़रते आदम عَلَیۡهِ السَّلَام के साथ) तेरे इस बर्ताव ने गुनाहगारों और नाफ़रमानों को तौबा की राह दिखाई ;

क्यूंकि येह तौबा ही है जो गुनाहों के असरात को मिटा देती है और ह़ाजतमन्द बन्दे और उस के मालिक के दरमियान अ़ज़ीम वसीला बनती है।

(1) अल क़ुरआनुल ह़कीम, सूरए ताहा 20, आयत नंबर: 121-122

मुतर्जम: अशरफ़ुल बयान, अज़: मख़दूम सय्यिद अशरफ़ जहांगीर رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه

(2) अल क़ुरआनुल ह़कीम, सूरतुल बक़रह 2, आयत नंबर: 37

मुतर्जम: अशरफ़ुल बयान, अज़: मख़दूम सय्यिद अशरफ़ जहांगीर رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه

और येह भी तेरा ही फ़रमान है:

مَنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ شِبْرًا تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ ذِرَاعًا، وَمَنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ ذِرَاعًا تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ
بَاعًا وَمَنْ مَشَىٰ إِلَيَّ أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً. (١)

यानी

“जो मुझ से एक बालिश्त क़रीब होता है मेरी रह़मत उस से एक हाथ क़रीब होती है,

और जो मुझ से एक हाथ क़रीब होता है मेरी रह़मत उस से दो हाथ क़रीब होती है,

और जो मेरी तरफ़ चल कर आता है मेरी रह़मत उस की त़रफ़ दौड़ कर जाती है।”

तेरे इस मज़कूरा फ़रमान ने,

तुझ से रुगरदानी करने वालों को,

और तेरे अह़काम की मुख़ालफ़त करने वालों को,

इस तरफ़ राग़िब किया कि वोह तेरी बारगाह में रुजूअ लाएं,

तुझ से तेरे रह़मो करम की भीक मांगें,

और तेरे अह़काम की पैरवी करें।

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MASJID, MUMBAI

(1) बुख़ारी शरीफ़, ह़दीस नंबर: 7536

नोट: बुख़ारी के अलफ़ाज़ कुछ अलग हैं, पूरी ह़दीस अ़रबी मतन के हाशिये में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

तेरे हबीब सय्यिदुल अव्वलीन वल आख़िरीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है:

اَلتَّآئِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَا ذَنْبَ لَهٗ. (١)

यानी

"गुनाहों से तौबा करने वाला ऐसा है, जैसा कि उस ने कोई गुनाह ना किया हो।"

इस फ़रमान ने तेरी मुख़ालफ़त और तेरी ना फ़रमानी में डूबे हुवे लोगों को,

इस तरफ़ राग़िब किया कि वोह तेरे आने वाले इस फ़रमान पर पहले ग़ौर करें:

﴿ اِلَّا مَنْ تَابَ وَ اٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ ﴾ (٢)

यानी

"मगर जो तौबा करे और ईमान लाए और नेकी करे पस यही गिरोह है कि अल्लाह उन के गुनाहों को नेकियों से बदल देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।"

और

(इस आयत में ग़ौर करने के बाद)

(1) सुनने इब्ने माजा, हदीस नंबर: 4391

(2) अल क़ुरआनुल हकीम, सूरतुल फ़ुरक़ान 25, आयत नंबर: 70,

मुतर्जम: अशरफ़ुल बयान, अज़: मख़दूम सय्यिद अशरफ़ जहांगीर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

इस आयत के तक़ाज़े पर अ़मल करते हुवे तौबा कर के नेक आमाल के ख़ूगर हो जाएं;

ताकि अल्लाह तआ़ला उन के गुनाहों को नेकियों में बदल दे।

मेरे मौला !

तेरा दरवाज़ा, तौबा करने वालों के लिए खुला हुवा है,

और तेरा मुनादी येह निदा करता रहता है:

هَلْ مِنْ مُّسْتَغْفِرٍ فَاَغْفِرَهٗ وَهَلْ مِنْ تَائِبٍ فَاَتُوْبَ عَلَيْهِ كَرَمًا وَّ لُطْفًا. (١)

यानी

"है कोई मग़फ़िरत चाहने वाला ? जिसे मैं बख़्श दूं !

है कोई तौबा करने वाला ? जिस की तौबा अपने लुत़्फ़ो करम से क़बूल कर लूं"

लिहाज़ा ऐ मालिको मौला मैं तेरे हुज़ूर तौबा कर रहा हूं और तुझ से अपने तमाम गुनाहों की मग़फ़िरत चाहता हूं।

मेरे मौला !

मैं अपने हर उस क़ौलो फ़ेल पर शर्मिंदा हूं जो तेरी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ मैं ने किए हैं,

मैं ने तो येह सोच लिया था कि मैं तेरी तरफ़ रुजूअ़ नहीं लाऊँगा मगर अब जब कि मैं ने तौबा कर ली है।

(1) अन्नुज़ूल लिद्दार क़ुत़नी, ह़दीस नंबर: 38

नोट: इस में करमन व लुत़्फ़न का लफ़्ज़ नहीं है।

और तुझ से मग़फ़िरत की भीक मांग रहा हूं,

इस लिए मुझे भी बख़्श दे मेरे मौला !

क्यूंकि तू तौबा करने वालों को और मग़फ़िरत चाहने वालों को पसंद फ़रमाता है।

इस्तिग़फ़ार करने वालों के लिए जिस तरह की मग़फ़िरत का वादा है,

मेरी, मेरे वालिदैन की और तमाम मोमिनीन व मुस्लिमीन की इसी तरह मग़फ़िरत फ़रमा दे।

मेरे मौला !

अगर तू सब को बख़्श दे, तब भी तेरी सलतनत में कुछ कमी ना हो।

मुझ पर रहम फ़रमा,

मेरी तौबा क़बूल फ़रमा ले,

मेरे तमाम गुनाहों की सज़ाएं मुआफ़ फ़रमा दे,

क्यूंकि अगर एक सज़ा भी बाक़ी बच गई,

गरचे मामूली ही क्यूं ना हो,

तो वोह मुझे ज़रूर नुक़्सान पहुंचाएगी।

इस लिए ऐ मंगतों की लाज रखने वाले !

मैं तेरे हुज़ूर तौबा कर के,

अपने गुनाहों की माफ़ी व मग़फ़िरत का सुवाल कर रहा हूं।

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

मेरे मौला !

गुनाहों को बख़्शने का इख़तियार तेरे सिवा किसी को नहीं है ;

क्यूंकि गुनाहों पर सज़ा देने का ह़क़ सिर्फ़ और सिर्फ़ तेरा है।

तो उन की मग़फ़िरत फ़रमाने और उन्हें मुआफ़ फ़रमाने का ह़क़ भी सिर्फ़ तुझी को होगा।

और ऐसा इस लिए है क्यूंकि तेरे अ़लावा जो भी हैं,

सब तेरे ममलूक हैं,

और जो ममलूक हों,

वोह अपने आक़ा के ह़क़ से बरियुज़्ज़िमा होने पर क़ादिर नहीं हो सकते।

और येह तेरी ह़िक्मत और बन्दों पर येह तेरा कितना बड़ा अह़सान है कि

तू ने गुनाहगारों को तौबा जैसी अ़ज़ीम नेमत अ़ता फ़रमाई।

और तौबा करने पर रह़मो करम, अ़फ़वो दरगुज़र और मग़फ़िरत व बख़्शिश का वादा फ़रमाया।

और तेरा येह अह़सान फ़रमाना, बन्दों से किसी मनफ़अ़त के ह़ुसूल के लिए है ना ख़ुद से किसी ज़रर को दूर करने के लिए है ;

बल्कि इस लिए है ताकि क़ियामत के दिन उन की नजात हो सके और वोह कामयाब व कामरान हो जाएं।

क़ियामत के उस दिन

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

जिस दिन,

आदमी अपने भाई से माँ बाप से बीवी और औलाद से भागेगा।

उन में से हर एक को उस दिन ऐसी परेशानकुन ह़ालत लाह़िक़ होगी जो उसे किसी दूसरी तरफ़ ध्यान करने ना देगी।

तेरा फ़रमान है:

﴿يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ۝ وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ۝ وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ ۝ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ۝﴾ (١)

इस दिन की शिद्दत और इस दिन की आ़म मुसीबतों के मुतअ़ल्लिक़ अम्बिया ए किराम और रसूलाने इ़ज़ाम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी कह उठेंगे

يَا رَبِّ نَفْسِي نَفْسِي. (٢)

तो जब मज़कूरा त़रीक़े पर कोई तौबा व इस्तिग़्फ़ार करेगा

और उस की ज़बान पर वोही कलिमात जारी होंगे, जो उस के दिल में हैं।

(1) अल क़ुरआनुल ह़कीम, सूरतुल अ़बस 80, आयत नंबर: 34 ता 37

तर्जमा : जिस रोज़ आदमी भागेगा अपने भाई से और अपनी माँ से और अपने बाप से और अपनी बीवी से और बेटों से। हर शख़्स के लिए उस रोज़ एक काम होगा, जिस में वोह मशग़ूल होगा

मुतर्जम: अशरफ़ुल बयान, अज़: मख़दूम सय्यिद अशरफ़ जहांगीर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

(2) बुख़ारी शरीफ़, ह़दीस नंबर: 4712

(यानी जो सच्चे दिल से "दुआ ए सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार" पढ़ेगा)

ला मुहाला उस की तौबा क़बूल होगी और उस की बख़्शिश कर दी जाएगी।

क्यूंकि येह दुआ तौबा भी है और इस्तिग़फ़ार भी,

तमाम अक़साम के इस्तिग़फ़ार इस इस्तिग़फ़ार की तरफ़ राजेअ़ हैं,

और कोई भी इस्तिग़फ़ार ऐसा नहीं जिस में इस इस्तिग़फ़ार का कुछ हिस्सा ना हो,

इसी वज्ह से इस का नाम "सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार" रखा गया है।

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

इस दुआ के पढ़ने का सवाब बहुत ज़ियादा है,

इस दुआ के मुतअ़ल्लिक़ रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है:

وَمَنْ قَالَهَا مِنَ النَّهَارِ مُوْقِنًا بِهَا فَمَاتَ مِنْ يَّوْمِهٖ قَبْلَ اَنْ يُّمْسِيَ فَهُوَ مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ وَمَنْ قَالَهَا مِنَ اللَّيْلِ وَهُوَ مُوْقِنٌ بِهَا فَمَاتَ قَبْلَ اَنْ يُّصْبِحَ فَهُوَ مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ. (١)

(1) बुख़ारी शरीफ, ह़दीस नंबर: 6323

यानी:

“जो इस दुआ पर यक़ीन रखते हुवे दिन में इसे पढ़ेगा और रात आने से पहले इन्तिक़ाल कर जाएगा तो वोह जन्नती होगा,

और जो कोई इस दुआ पर यक़ीन रखते हुवे रात में इसे पढ़ेगा और दिन निकलने से पहले इन्तिक़ाल कर जाएगा तो वोह भी जन्नती होगा।”

“शर्हु सय्यिदिल इस्तिग़फ़ार” मुकम्मल हुई।

येह किताब, अ़ल्लामा ए दहर, वासिल बिल्लाह, ह़ज़रते मख़्दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी غَفَرَ اللّٰهُ لَهٗ وَلِمَنْ تَبِعَهٗ की तसानीफ़ में से एक तस्नीफ़ है।

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर

(ज़ेरे इन्तिज़ाम मीनारा मस्जिद ट्रस्ट, मुंबई) से शाएअ़ होने वाली किताबें

मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर

के क़ियाम से पहले भी हमारी टीम, “अशरफ़ी लत़ीफ़ फ़ाउन्डेशन” के तह़त, मुन्दरिजा ज़ैल इ़ल्मी किताबों पर काम कर चुकी है:

- 490 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल हुज़ूर शैख़ुल हिन्द ह़ज़रते सय्यिद कुमैल अशरफ़ अशरफ़ी जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ख़ुत़बात का दिलकश मजमूआ बनाम: **“ख़ुत़बाते शैख़ुल हिन्द (जिल्द अव्वल)”**

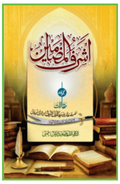

- 432 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल हुज़ूर शैख़ुल हिन्द ह़ज़रते सय्यिद कुमैल अशरफ़ अशरफ़ी जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मक़ालात का इ़ल्मी मजमूआ बनाम: **“अशरफ़ुल मज़ामीन”**

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI

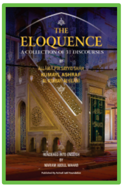

- 458 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल अंग्रेज़ी ज़बान में हुज़ूर शैख़ुल हिन्द ह़ज़रते सय्यिद कुमैल अशरफ़ अशरफ़ी जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ख़ुत़बात का दिलनशीन मजमूआ बनाम: **“The Eloquence Vol 1”**

- 98 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल, ग़ैर मुस्लिम की त़रफ़ से, क़ुरबानी पर होने वाले एतिराज़ात का इ़ल्मी मुह़ासबा, बनाम:
  “क़ुरबानी की ह़क़ीक़त: एक तजज़ियाती मुत़ाला”

- 96 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल, मौला अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की विलादत ख़ानए काबा में होने के सिलसिले में इ़ल्मी किताब, बनाम: **“मौलूदे काबा”**

आसताना ए मुक़द्दसा

क़ुत़बे कोकन ह़ज़रते मख़दूम फ़क़ीह अ़ली महाइमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه

मौला अ़ली रिसर्च सेन्टर

का बुनियादी मक़्सद येह है कि दुनिया भर की लाइब्रेरियों से अस्लाफ़े किराम की ऐसी किताबें ह़ासिल की जाएं जो अब तक शाएअ़ नहीं हुईं या शाएअ़ तो हुईं मगर अब नायाब हो चुकी हैं उन किताबों पर फिर से जदीद अंदाज़ में काम किया जाए । अगर वोह किताबें अ़रबी या फ़ारसी ज़बान में हैं तो उर्दू, हिन्दी और इंग्लिश तीनों ज़बानों में उन का आसान तर्जमा भी किया जाए । अ़रबी और फ़ारसी इ़बारत की तह़क़ीक़ की जाए, मुश्किल किताबों को आसान किया जाए और उन की इशाअ़त करवा कर उन्हें दुनिया भर की लाइब्रेरियों, अहले इ़ल्म, मुह़क़्क़िक़ीन, स्कोलर्ज़ और अ़वाम तक पहुंचाया जाए ।

Maula Ali Research Centre

aims to acquire old Islamic manuscripts (Interpretations, Commentaries, Exegesis, etc.) of our ancestors from libraries across the world which have not been published; if published, they are no longer accessible, etc. and work upon its publication according to modern standards by carrying out research on the Arabic and Persian scripts, referencing, easy translation into multiple languages, mainly English, Hindi and Urdu, and lastly, printing and distributing it amongst the scholars, research experts, intellectuals and the entire Muslim Ummah.

MAULA ALI RESEARCH CENTRE
MINARA MASJID, MUMBAI
WWW.MINARAMASJID.COM